GYANBODH

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

किशोरावस्था के प्रति अभिभावकों एवं शिक्षकों की जागरूकता,सहयोग एवं अपेक्षित शिक्षा व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन I

प्रोफेसर सुषमा पांडेय
शिक्षा शास्त्र विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

सुरभि मिश्रा
शोध छात्र भूगोल विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

मानव जीवन के विकास का प्रत्येक चरण शिक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है और सभी अवस्थाओं में किशोरावस्था का अपना अलग महत्व है क्योंकि इस अवस्था की तैयारी सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करती है। किशोरावस्था की विशिष्टता के विषय में अरस्तु ने कहा था कि किशोर मद पिये मदमस्त की भांति ही प्रकृति द्वारा गर्म होते है। हैडो कमेटी रिपोर्ट में कहा गया है कि ग्यारह में से बारह वर्ष की आयु में बालक की नसों में ज्वार उठना प्रारम्भ हो जाता है, इसे किशोरावस्था के नाम से जाना जाता है, यदि इस ज्वार का समय रहते उपयोग कर लिया जाये और इसकी शक्ति तथा धारा के साथ–साथ नई यात्रा आरम्भ कर दी जाये तो सफलता प्राप्त की जा सकती है। किशोरावस्था शिक्षा शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों के लिये जिज्ञासा का विषय रहा है, इसीलिये किलपैट्रिक ने कहा कि इस बात पर कोई मतभेद नहीं हो सकता है कि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।

विग और हण्ट ने अपने शब्दों में कहा कि– किशोरावस्था की विशेषताओं को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द– परिवर्तन है। परिवर्तन शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक होता है। यह परिवर्तन न तो किशोर एवं किशोरियों को समझ में आता है, और अभिभावकों को भी द्वन्द की स्थिति से गुजरना पड़ता है। किशोरावस्था की सामान्य विशेषतायें होती है–

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

- शारीरिक विकास में तीव्रता एवं परिवर्तन।
- मस्तिष्क का सम्पूर्ण एवं बहु आयामी विकास।
- घनिष्ठ एवं व्यक्तिगत मित्रता।
- व्यवहार में आवेंगों एवं संवेगों में प्रबलता।
- स्थिरता एवं समायोजन का बहुधा अभवा।
- स्वतंत्रता की तीव्र इच्छा व विद्रोह की भावना।
- कामशक्ति की परिपक्वता।
- समूह से अत्याधिक प्रभावित।
- रूचियों में परिवर्तन के पश्चात् ठहराव।
- ईश्वर व धर्म में आस्था।
- स्वयं के जीवन दर्शन का निर्माण ।
- अपनी स्थिति एवं महत्व की तीव्र अकांक्षा।
- व्यवसाय चयन हेतु चिन्ता।

किशोरावस्था जीवन का वह काल होता है, जो सम्पूर्ण जीवन की रूपरेखा तय कर देता है। तीव्र शारीरिक परिवर्तन मानसिक उद्विग्नता को जन्म देता है। इससे बच्चे अपने आपको असहज महसूस करते है। स्किनर इस बात को स्वीकार करते हैं कि– किशोरों को निर्णय करने का कोई अनुभव नहीं होता है। शैक्षिक दृष्टि से भी मनौवैज्ञानिकों के अनुसार यह अवस्था अत्यधिक महत्व की है। तनाव एवं संघर्ष से भरे इस अवस्था में किशोर–किशोरियों को अपने विद्यालय एवं घर का वातावरण ही सही मार्गदर्शन दे सकता है।

परन्तु इसके लिये अभिभावक एवं शिक्षकों में सही समझ की आवश्यकता होगी। क्या वास्तव में अभिभावक किशोर बालक–बालिकाओं को पूर्ण सहयोग कर पा रहे हैं, इस अध्ययन में यही जानने का प्रयास किया गया है कि अभिभावक अपने किशोर बच्चों को कितना समझ पाते हैं और अध्यापक एवं अभिभावक किशोरावस्था में कैसी शिक्षा हेतु सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

- यह **अध्ययन** करना कि कितने प्रतिशत अभिभावक किशोर बालक एवं बालिकाओं से उनकी समस्याओं आवश्यकताओं एवं द्वन्द की स्थिति में खुलकर सहयोग देते है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

- यह **अध्ययन** करना कि किशोर/किशोरियों को ग्रामीण एवं शहरी माता–पिता में द्वारा मिलने वाले सहयोग में क्या अन्तर है।
- यौन एवं स्वास्थ्य शिक्षा के सन्दर्भ में अध्यापकों/अभिभावकों के दृष्टिकोण ज्ञात करना।

परिकल्पना–

उपरोक्त उद्देश्यों के आधार पर निम्न परिकल्पनाये निर्मित हुई–

1. ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों में किशोर/किशोरियों की समस्याओं एवं आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता में अन्तर है।
2. यौन शिक्षा के सन्दर्भ में अभिभावक नकारात्मक दृष्टिकोण रखते है।
3. स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण सकारात्मक है।

न्यादर्श–

इस अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इलाहाबाद एवं लखनऊ जनपद के 10 शहरी एवं 10 ग्रामीण इण्टर कालेजों में अध्ययरनत किशोर एवं किशोरियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया। चयनित न्यादर्श में 12 से 18 वर्ष के किशोर एवं किशोरियों एवं उनके अभिभावकों से आंकड़े एकत्र किये गये। इस प्रकार से चयनित न्यादर्श का विवरण है–

चयनित जनपद	ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय	शहरी माध्यमिक विद्यालय	ग्रामीण किशोर	शहरी किशोर	ग्रामीण अभिभावक	शहरी अभिभावक	अध्यापक
इलाहाबाद	10	10	2058	2056	1604	1503	46
लखनऊ	10	10	1680	1860	1203	1403	56

उपकरण–

शोधार्थियों द्वारा आंकेड़ों के एकत्रीकरण हेतु निम्न उपकरण निर्मित किये गये–

1. किशोरावस्था में उचित शिक्षा से सम्बन्धित साक्षात्कार प्रपत्र।
2. किशोरावस्था की समस्याओं एवं आवश्यकताओं से सम्बंधित प्रश्नावली– इस प्रश्नावली में 20 कथन रखे गये है जो कि किशोरावस्था की विशिष्टताओं से सम्बन्धित है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

शोधविधि–

इस अध्ययन हेतु शोध सर्वेक्षण विधि (साक्षात्कार एवं प्रश्नावली) को अपनाया गया है। शोधार्थियों द्वारा निर्मित उपकरणों के साथ चयनित जनपदों के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया एवं किशोर–किशोरियों एवं अभिभावकों पर निर्मित उपकरण प्रशासित किये गये।

प्राप्त परिणाम–

शोधार्थियों द्वारा विभिन्न उपकरणों पर प्राप्त आंकड़ों को व्यवस्थित कर विश्लेषण किया गया और प्राप्त परिणामों को नीचे प्रदर्शित किया गया है।

किशोरावस्था की समस्याओं एवं आवश्यकताओं से सम्बंधित प्रश्नावली पर प्राप्त परिणाम–

किशोरावस्था की समस्याओं एवं आवश्यकताओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों की दृष्टिकोण को जानने हेतु यह प्रश्नावली 3738 ग्रामीण 3916 शहरी किशोर–किशोरियों से आंकड़े एकत्र किये गये प्राप्त परिणाम चौंकानें वाले थे, और ये प्रदर्शित किये जा रहे हैं।

किशोरावस्था में अभिभावकों की समझ एवं सहयोग

चित्र 1

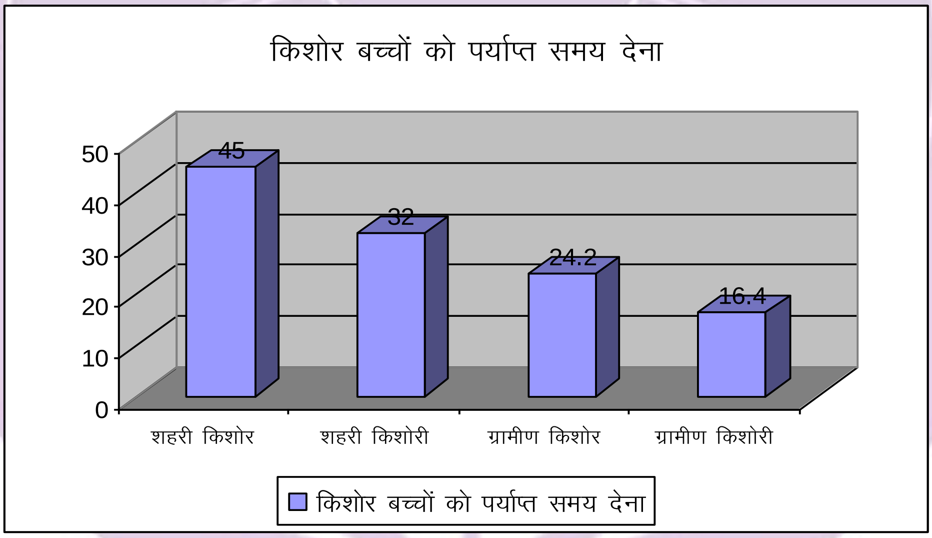

- चित्र 1– यह स्पष्ट कर रहा है कि शहरी अभिभावक ग्रामीण अभिभावकों की अपेक्षा किशोर बच्चों को अधिक समय देते हैं। मात्र 32 प्रतिशत एवं 16.4 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावक अपनी किशोर बालिका को समय देते हैं।

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

चित्र 2

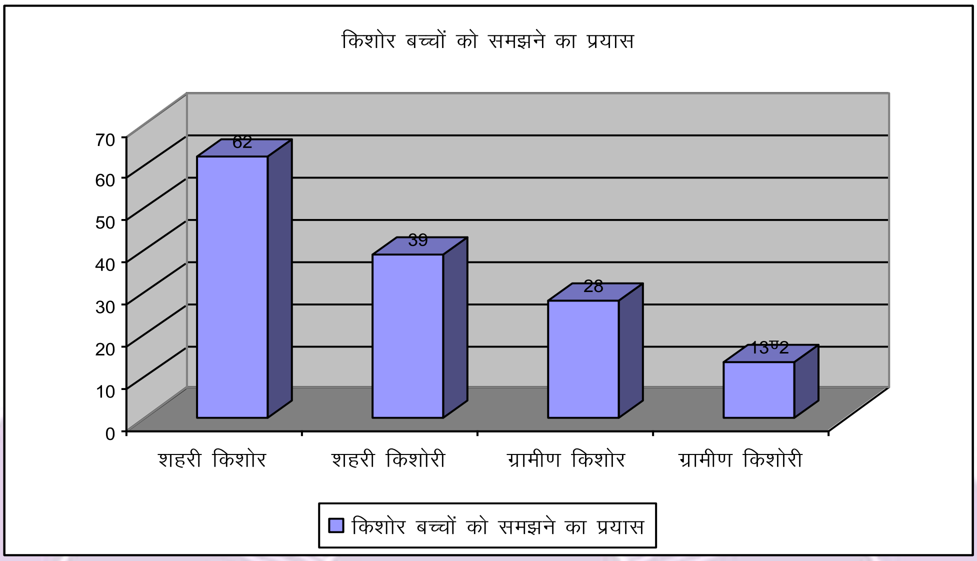

- चित्र 2– यह प्रदर्शित है कि 62 प्रतिशत शहरी एवं 28 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावक अपने किशोर बालक को समझने का प्रयास करते हैं परन्तु किशोरी बालिका को समझने का प्रयास दोनों ही कम करते हैं।

चित्र 3

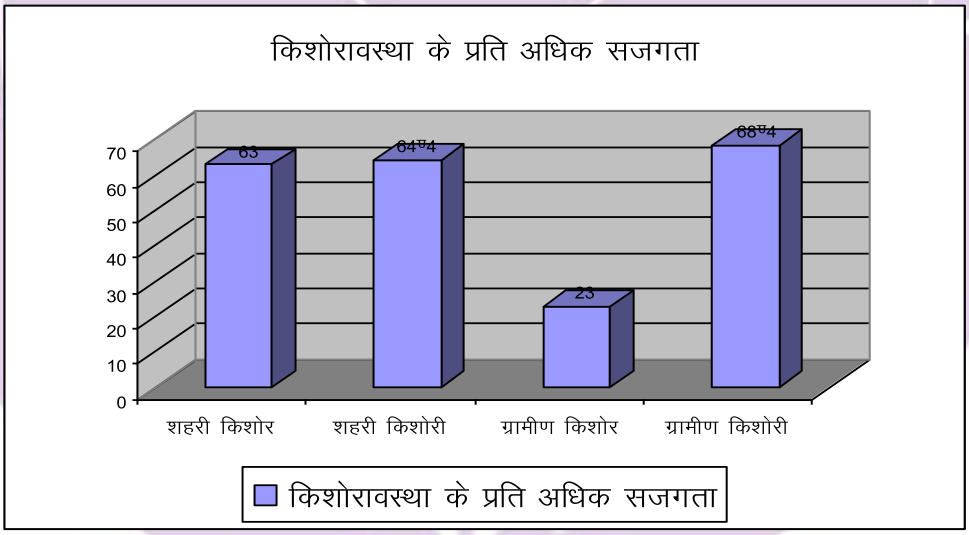

- चित्र 3– मे यह प्रदर्शित है कि शहरी अभिभावक, ग्रामीण अभिभावकों की अपेक्षा किशोर बालक के प्रति सजग रहते हैं। परन्तु किशोरियों के प्रति दोनों ही अधिक सजग रहते है। ग्रामीण अभिभावक किशोर बालक के प्रति निश्चिन्त हो जाते हैं।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

चित्र 4

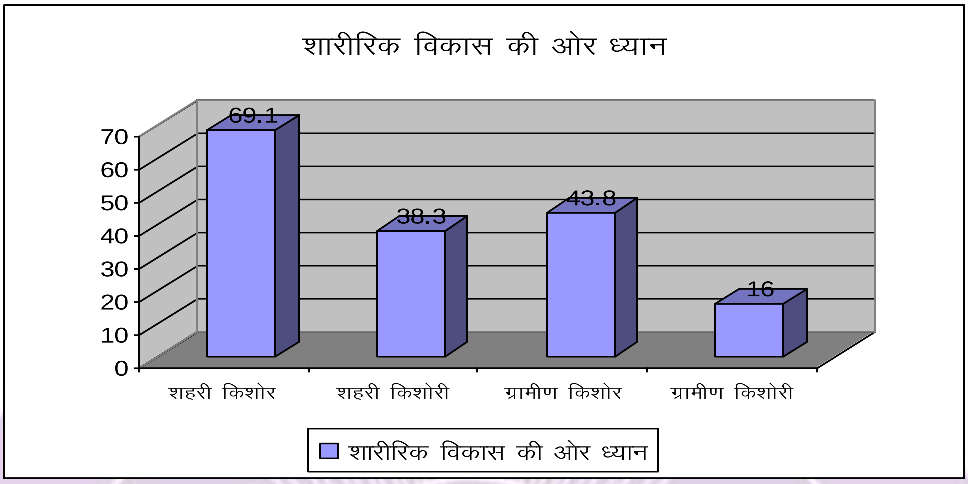

- चित्र 4– में यह इंगित कर रहा है कि ग्रामीण अभिभावकों की अपेक्षा शहरी अभिभावक शारीरिक विकास के प्रति अधिक सजग है, परन्तु दोनों ही बालकों के प्रति अधिक सजग रहते है। 38.3 प्रतिशत शहरी अभिभावक बालिकाओं की ओर ध्यान देते है पर मात्र 16 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावकों ने स्वीकार किया है कि वे अपनी किशोर बालिकाओं की शारीरिक विकास को ध्यान रखकर वैसे ही आहार की व्यवस्था करते हैं।

चित्र 5

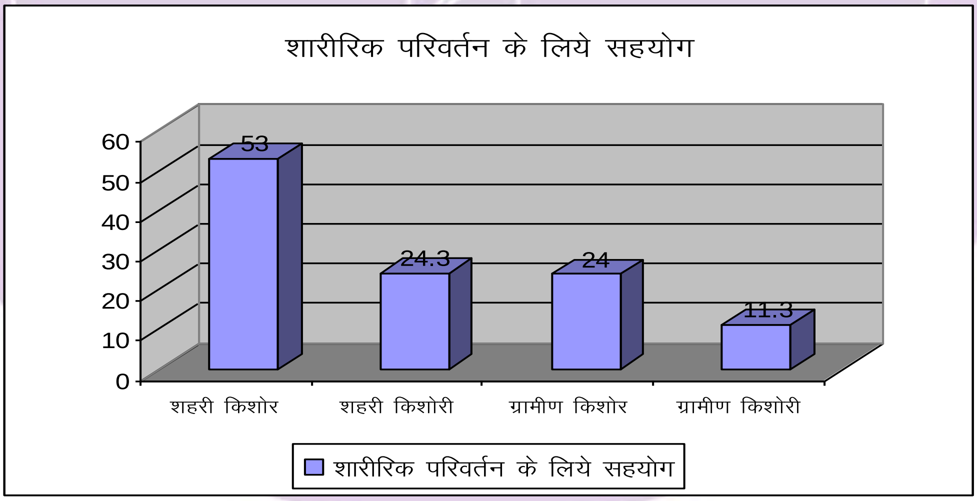

- चित्र 5– यह इंगित कर रहा है कि मात्र 53 प्रतिशत किशोर बालको के अभिभावक ही किशोर बच्चों के शारीरिक परिवर्तनों के लिये बच्चों को सहयोग देते हैं। ग्रामीण अभिभावकों में इसके प्रति कम

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

जागरूकता है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण एवं शहरी दोनो ही अपनी किशोर बालिकाओं के प्रति बालकों से कम ध्यान देते हैं।

चित्र 6

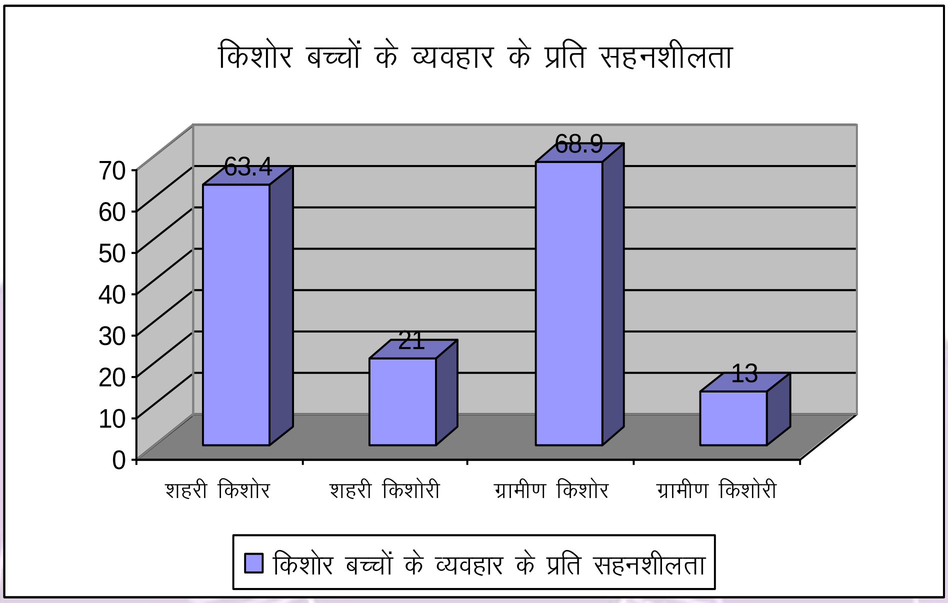

- चित्र 6– यह दिखा रहा है कि 60प्रतिशत से अधिक ग्रामीण एवं शहरी अभिभावक अपने किशोर बच्चों के असंयत व्यवहार के प्रति सहनशीलता प्रदर्शित करते हैं।

चित्र 7

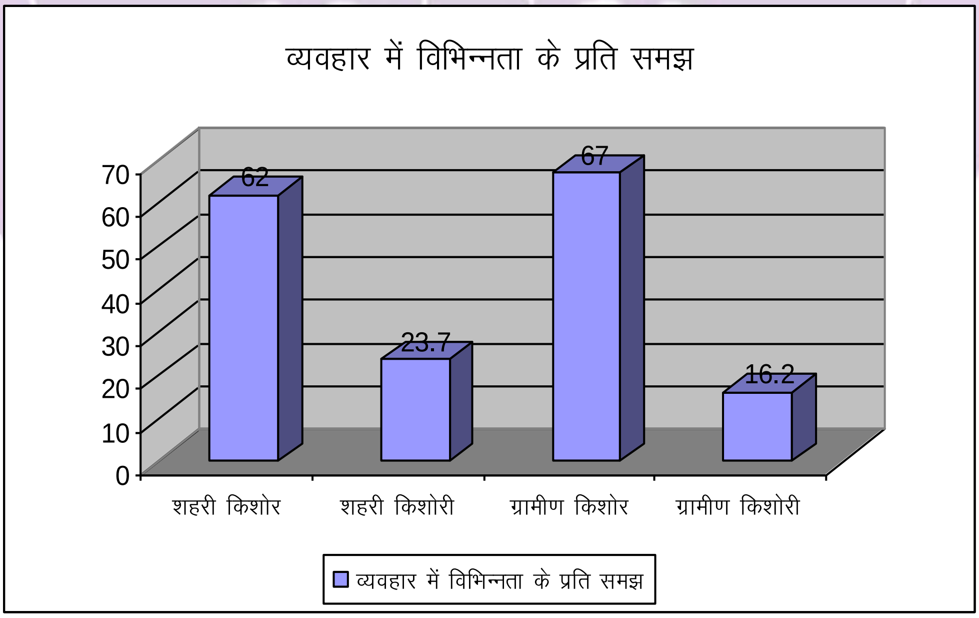

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

- चित्र 7– से यह समझा जा सकता है, कि 60 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण एवं शहरी अभिभावक अपने किशोर बालक के व्यवहार में विभिन्नता को समझने का प्रयास करते हैं पर किशोरियों के असंयत व्यवहार के प्रति सहज नहीं हो पाते हैं।

चित्र 8

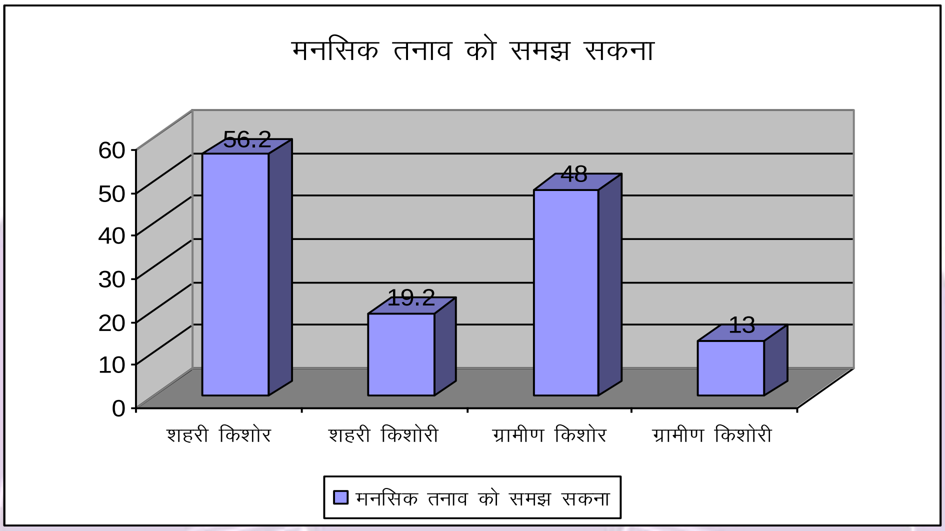

- चित्र 8– यह इंगित कर रहा है कि मात्र 50 प्रतिशत के करीब अभिभावक ही बच्चों के मानसिक तनाव को समझकर सहयोग देते हैं, पर बालिकाओं के प्रति दोनों ही उदासीन दिखायी देते हैं।

चित्र 9

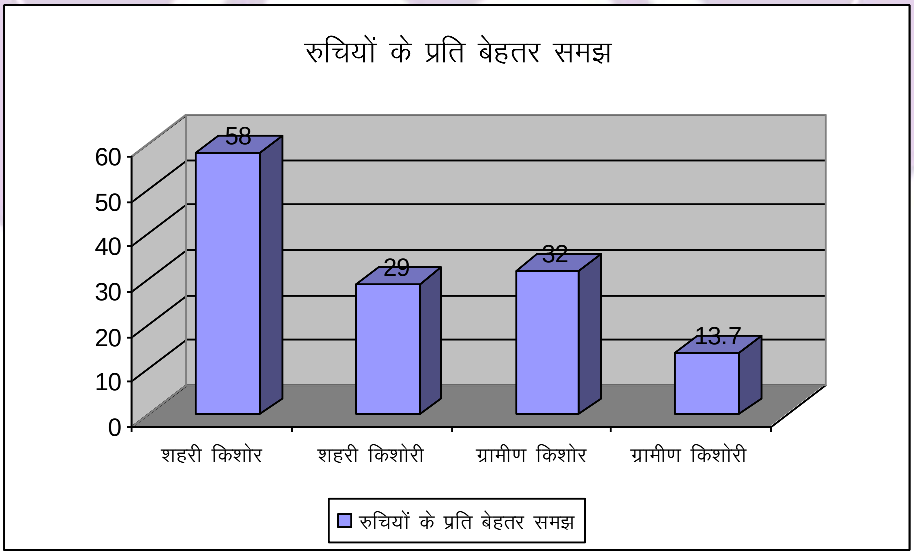

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

- चित्र 9– से यह स्पष्ट है कि 58 प्रतिशत से अधिक शहरी अभिभावक अपने किशोर बालकों को उनकी विविध रूचियों को पूरा करने में सहयोग देते हैं पर ग्रामीण अभिभावकों में इसके प्रति उचित समझ की कमी है, परन्तु बालिकाओं की इच्छाओं को दोनों ही बालकों की अपेक्षा कम प्रश्रय देते है।

चित्र 10

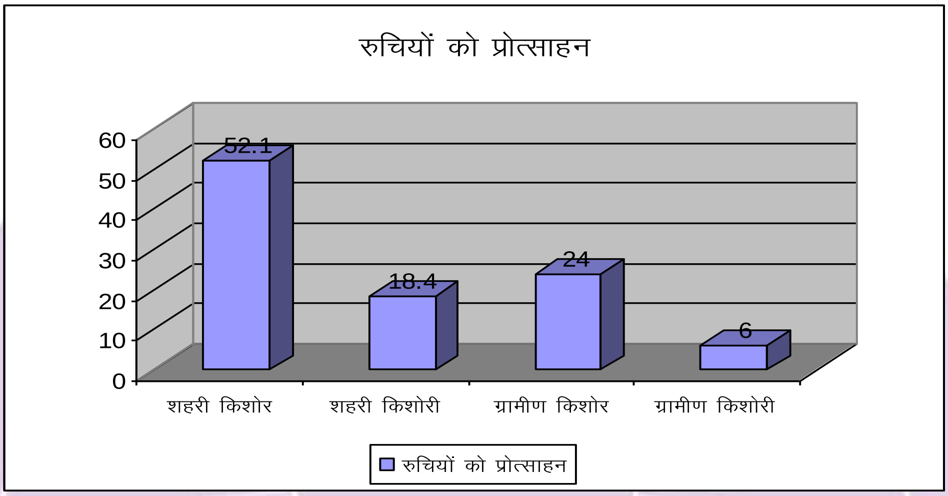

- चित्र 10– से यह स्पष्ट है कि शहरी अभिभावक अपने किशोर बच्चों के रुचियों को ग्रामीण अर्भिभावकों से अधिक प्रश्रय देते है, परन्तु बालकों की रुचियों को अधिक ध्यान देते है।

चित्र 11

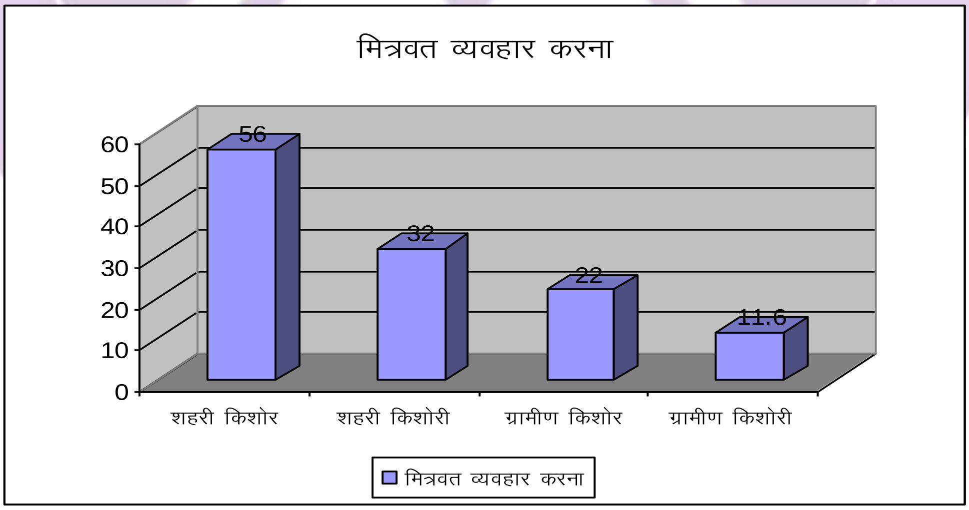

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

➢ चित्र 11– से यह स्पष्ट है कि शहरी अभिभावक अपने किशोर बच्चों से मित्रवत व्यवहार करते हैं परन्तु ग्रामीण अभिभावक अपने बच्चों को अधिक स्वतंत्र कर देते हैं। दोनों ही बालिकाओं के साथ बालकों के समान व्यवहार नहीं करते है। मात्र 32 प्रतिशत शहरी अभिभावक ही बालिकाओं के साथ मित्रवत व्यवहार करते है।

चित्र 12

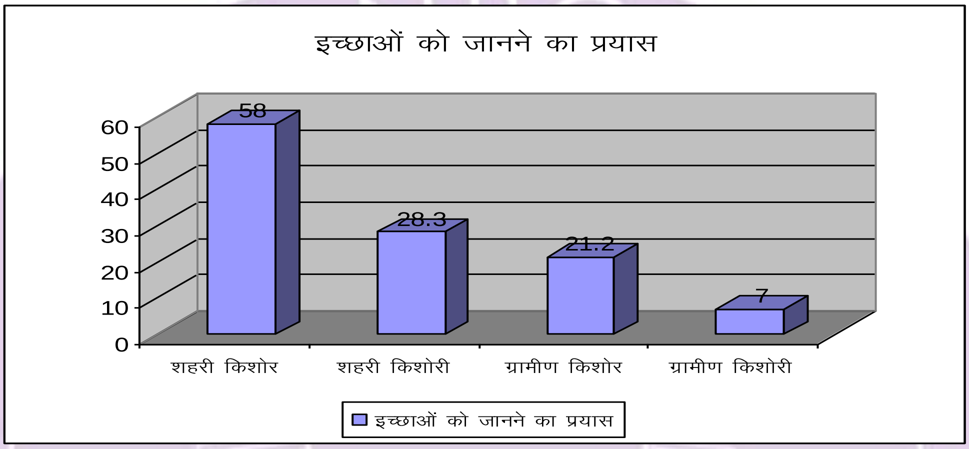

➢ चित्र 12– से यह स्पष्ट है 58 प्रतिशत से अधिक शहरी अभिभावक अपने किशोर बालकों को समझने का प्रयास करते हैं, परन्तु ग्रामीण अभिभावकों में इसका प्रतिशत कम पाया गया दूसरी ओर बालिकाओं के अभिभावकों में मात्र 42 प्रतिशत शहरी अभिभावक ही उनको समझते हैं।

चित्र 13

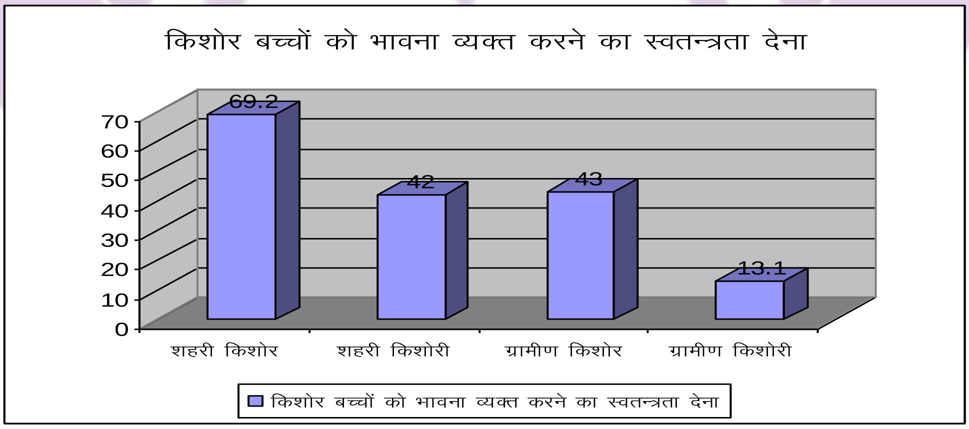

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

- चित्र 13– से यह स्पष्ट है कि शहरी अभिभावक ग्रामीण अभिभावकों की अपेक्षा अपने बच्चों को अपनी भावना को व्यक्त करने की स्वतंत्रता देते हैं, जबकि ग्रामीण किशोरियों को यह स्वतंत्रता सबसे कम मिली है क्योंकि उनके माता–पिता स्वतंत्रता देना उचित नहीं समझते है।

चित्र 14

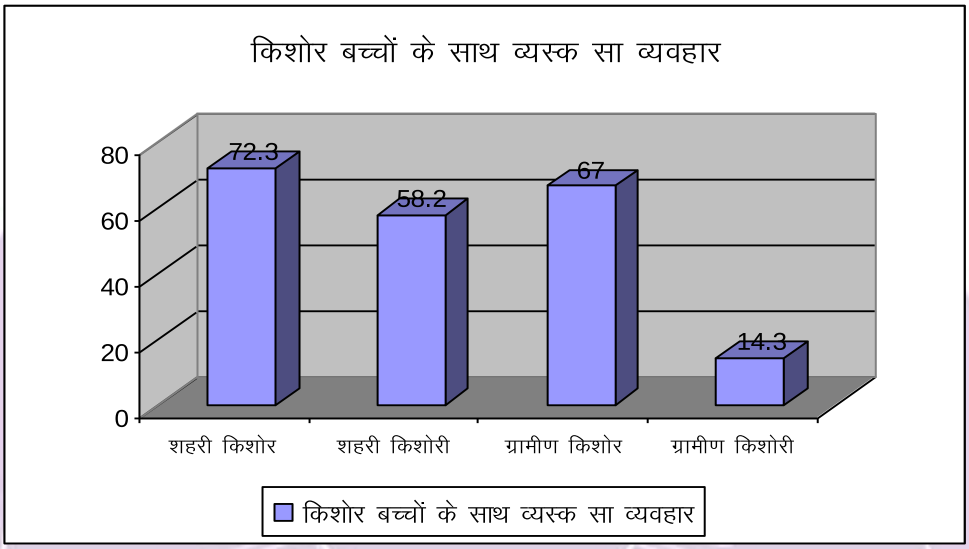

- चित्र 14– से यह प्रदर्शित है कि 70 प्रतिशत से अधिक शहरी अभिभावक अपने बच्चों के साथ व्यस्क जैसा व्यवहार करते हैं, 67 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावक भी बालकों के साथ व्यस्क जैसा व्यवहार करते हैं, परन्तु मात्र 14.3 प्रतिशत अभिभावक ही किशोरियों के साथ व्यस्क जैसा व्यवहार करते हैं।

चित्र 15

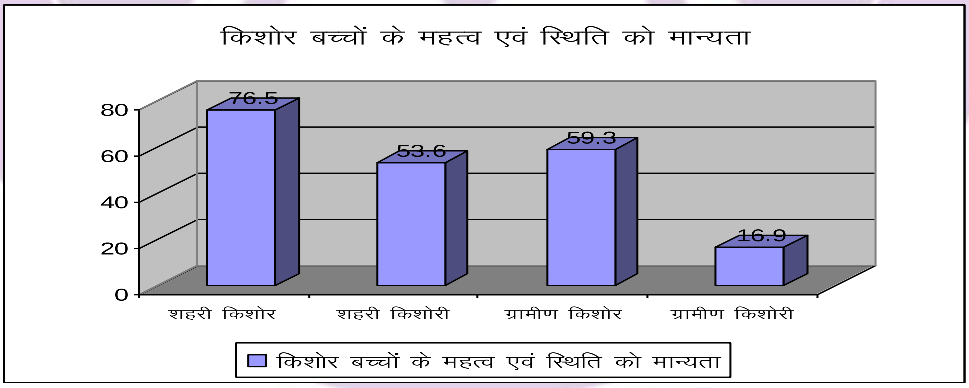

- चित्र 15– यह दिखा रहा है कि 60 प्रतिशत के करीब शहरी व ग्रामीण अभिभावक अपने बालकों के महत्व एवं स्थिति को मान्यता देते हैं, पर बालिकाओं के मामले में सबसे खराब स्थिति ग्रामीण बालिकाओं की है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

किशोरावस्था में यौन एवं स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति अभिभावक एवं शिक्षक दृष्टिकोण से सम्बन्धित परिणाम

किशोरावस्था में दी जाने वाली शिक्षा के प्रति अभिभावको एवं शिक्षकों के दृष्टिकोण को जानना आवश्यक था क्योंकि इनका सम्वेत प्रयास ही इस अवस्था के लिये उचित शिक्षा का मार्गदर्शन कर सकता है। इसके लिये चयनित जनपदों के 2807 ग्रामीण एवं 2903 शहरी अभिभावको पर किशोरावस्था में उचित शिक्षा के प्रति जागरुकता से सम्बन्धित साक्षात्कार लिया गया। प्राप्त परिणाम निम्नवत् है–

चित्र 16

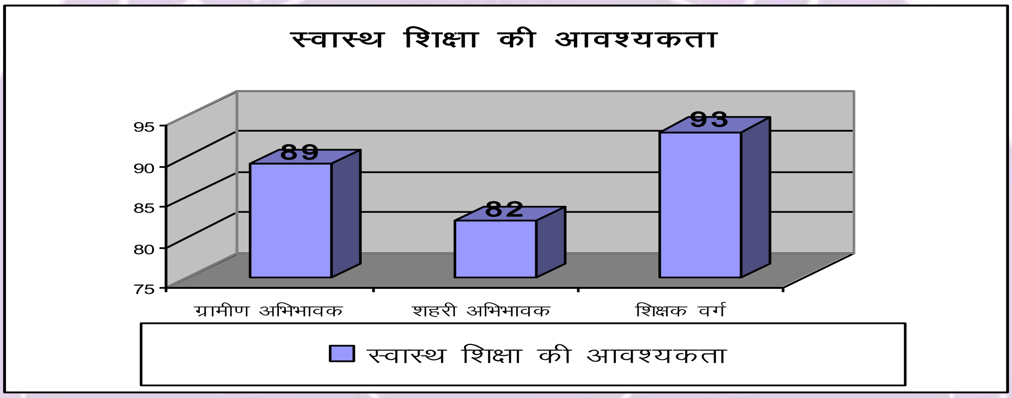

- चित्र 16– से यह प्रदर्शित है कि 80 प्रतिशत से अधिक शहरी और ग्रामीण अभिभावक किशोरावस्था में स्वास्थ्य शिक्षा की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं, और 93 प्रतिशत शिक्षकों ने भी पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा को रखने हेतु सहमति प्रदान की।

चित्र 17

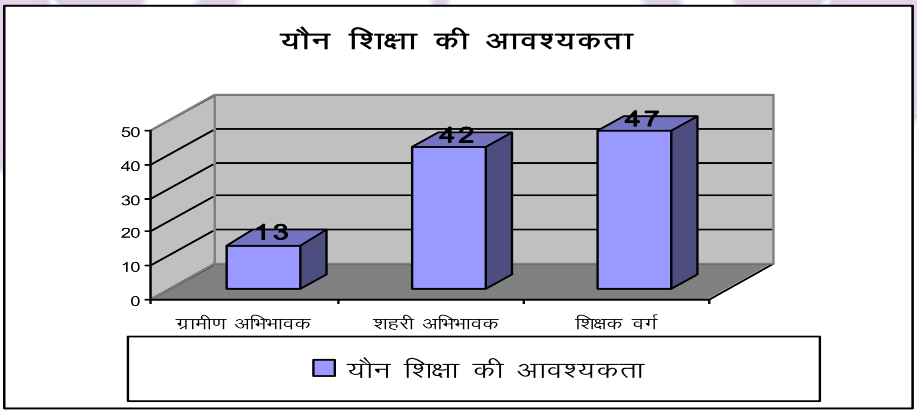

- चित्र 17– यह इंगित कर रहा है कि यौन शिक्षा की आवश्यकता पर 60 प्रतिशत से अधिक शहरी अभिभावक एवं अध्यापक दुविधा की स्थिति में नकारते हैं, और ग्रामीण अभिभावक तो अधिकांशतः इसके

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

पक्ष में नहीं है। उनके अनुसार अर्थ, मोक्ष व काम तो मानव जीवन के उद्देश्य है और इसे सिखाने की आवश्यकता नहीं। अध्यापकों के अनुसार यौन शिक्षा से अनुशासनहीनता फैलेगी और वे इसे पढ़ाने में झिझक महसूस करते है।

चित्र 18

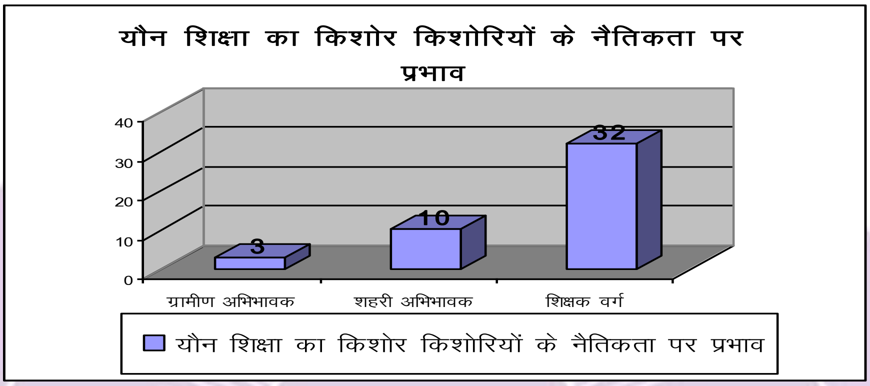

- चित्र 18– से यह स्पष्ट है कि अधिकांश ग्रामीण एवं शहरी अभिभावक यह स्वीकार करते हैं, कि यौन शिक्षा का किशोर–किशोरियों के नैतिकता पर नकारात्मक असर पड़ेगा। मात्र 32 प्रतिशत अध्यापक ही यह स्वीकार कर पाये कि यौन शिक्षा से नैतिकता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

चित्र 19

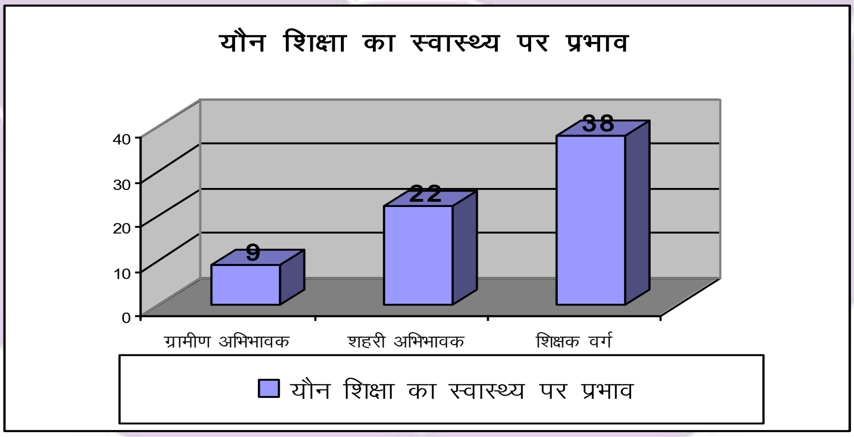

- चित्र 19– से यह स्पष्ट हो रहा है कि अधिकांश अभिभावक एवं अध्यापक दोनों ही इस बात पर सहमत नहीं पाये गये कि यौन शिक्षा से बच्चों के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा उनके अनुसार इसके लिये स्वास्थ्य शिक्षा दी जानी चाहिये।

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

चित्र 20

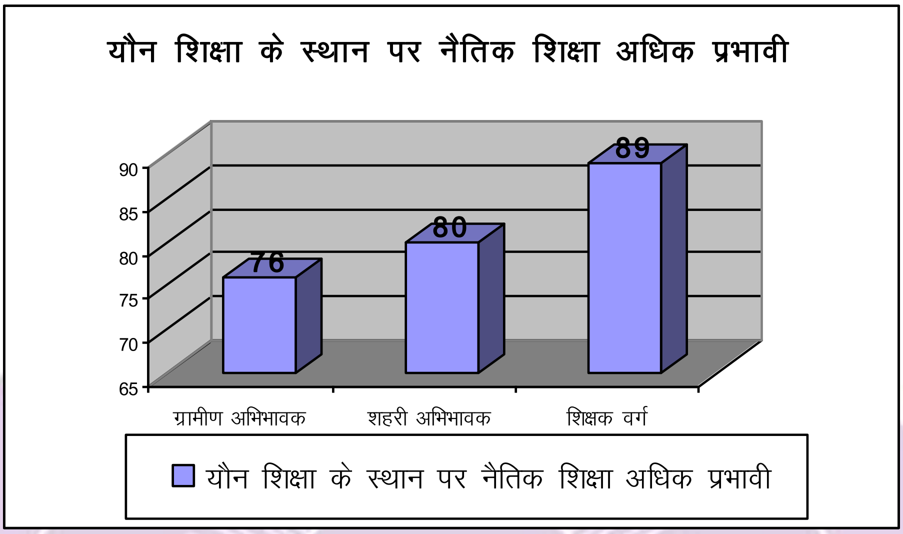

➢ चित्र 20– से यह तथ्य उभर रहा है कि यौन शिक्षा के स्थान पर नैतिक शिक्षा की आवश्यकता पर 80प्रतिशत से अधिक शहरी एवं ग्रामीण अभिभावकों के साथ अध्यापक भी सहमत पाये गये। इनके अनुसार नैतिक शिक्षा किशोर बच्चों के मानसिक उद्विग्नता को कम कर भटकाव रोकेगी।

चित्र 21

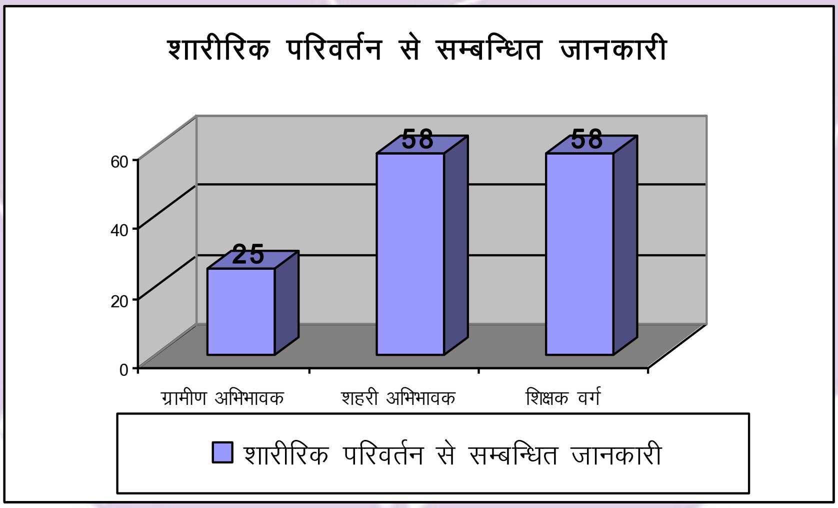

➢ चित्र 21– में देखकर यह स्पष्ट है कि 58 प्रतिशत शहरी एवं 26 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावक यह बात स्वीकार करते हैं कि बच्चों को शारीरिक परिवर्तन से सम्बंधित जानकारी दी जानी चाहिये, शेष यह मानते हैं कि इसकी जानकारी अपने आप हो जाती है, इसके साथ 58 प्रतिशत अभिभावक भी यह स्वीकार करते हैं बच्चों को शारीरिक परिवर्तन की जानकारी होनी चाहिये।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

चित्र 22

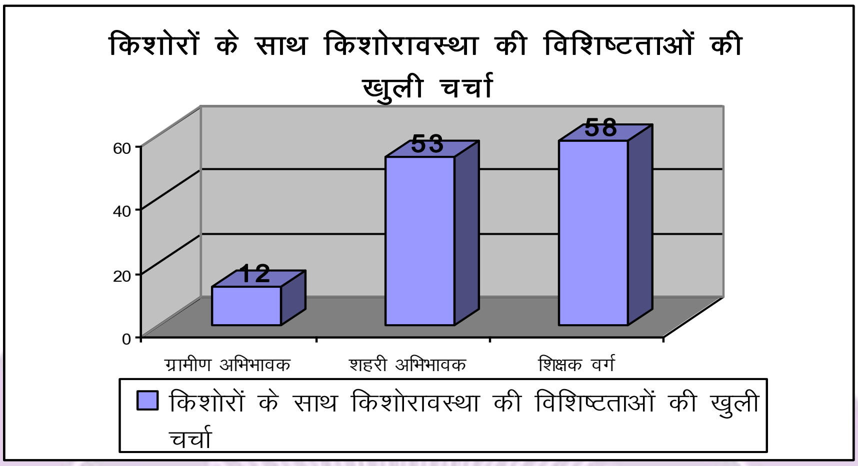

- चित्र 22– से यह तथ्य उभर रहे हैं, कि ग्रामीण अभिभावकों की अपेक्षा शहरी अभिभावक अधिक खुले रूप में किशोर बच्चों से खुली चर्चा की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं, जबकि 58 प्रतिशत शिक्षक भी इसकी आवश्यकता को स्वीकार करते हैं।

चित्र 23

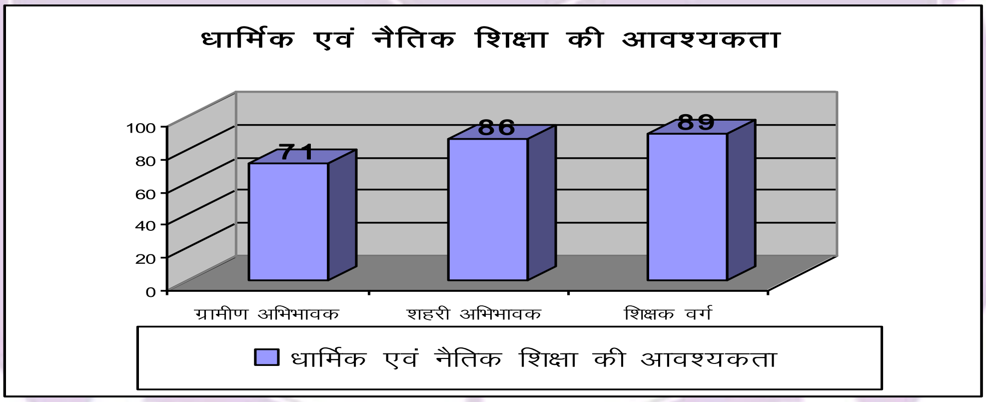

- चित्र 23– से यह स्पष्ट हो रहा है कि 75 प्रतिशत से अधिक अभिभावक एवं अध्यापक इस बात पर सहमत पाये गये कि धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा को यौन शिक्षा के स्थान पर दिया जाये।

निष्कर्ष– उपरोक्त परिणामों से कुछ विशेष तथ्य एवं सुझाव उभर कर आये–

1–अभिभावकों में किशोरावस्था के प्रति उचित समझ की कमी है।

2–शहरी अभिभावकों में ग्रामीण अभिभावकों की तुलना में किशोर बच्चों की समस्याओं एवं आवश्यकताओं के प्रति अधिक सजगता एवं समझ है। इसके अतिरिक्त वे किशोर बच्चों से अधिक सहयोग देने का प्रयास करते है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

3–ग्रामीण एवं शहरी अभिभावक किशोर बालकों की आवश्यकता एवं समस्याओं को किशोर बालिकाओं की अपेक्षा अधिक समझते हैं और प्रश्रय देते हैं।

4–अध्यापक एवं अभिभावक यौन शिक्षा के प्रति पूर्णतया सहज नहीं है। स्वास्थ्य एवं नैतिक धार्मिक शिक्षा को अधिक महत्व देते है। डॉ0 विनोद छेबी ने यह स्पष्ट किया कि यूनाईटेड स्टेट्स में सन् 1967 में यौन शिक्षा को विद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर लिया, परन्तु 17 वर्ष बाद के अध्ययन में यह चौका देने वाले तथ्य निकले कि 25प्रतिशत से अधिक किशोर बच्चों ने यौन नैतिकता तोड़ दी और उनके यौन सम्बंधी बीमारियां उभरी। एस0सी0ई0आर0टी0 द्वारा प्रायोजित किशोरावस्था की शिक्षा पर कार्यशाला में शिक्षकों ने स्वीकार किया कि वे किशोरों से खुली चर्चा नहीं कर सकते वे बच्चों को सम्भाल नहीं पायेंगे। जीव विज्ञान विषय के अतिरिक्त शिक्षकों को यौन विशिष्टताओं की जानकारी भी नहीं होती तो फिर शिक्षक क्या बतायेंगे ? अतः पहले शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाये।

5– शिक्षको के अनुसार किशोर कुछ गलतियां जिज्ञासा एवं तनाववश करते हैं तब अध्यापकों एवं अभिभावकों को बेहतर समझ के साथ इसे उत्साहपूर्वक सुलझाने का प्रयास करना चाहिये। आवश्यक प्रयास को हम इस रूप में देख सकते है–

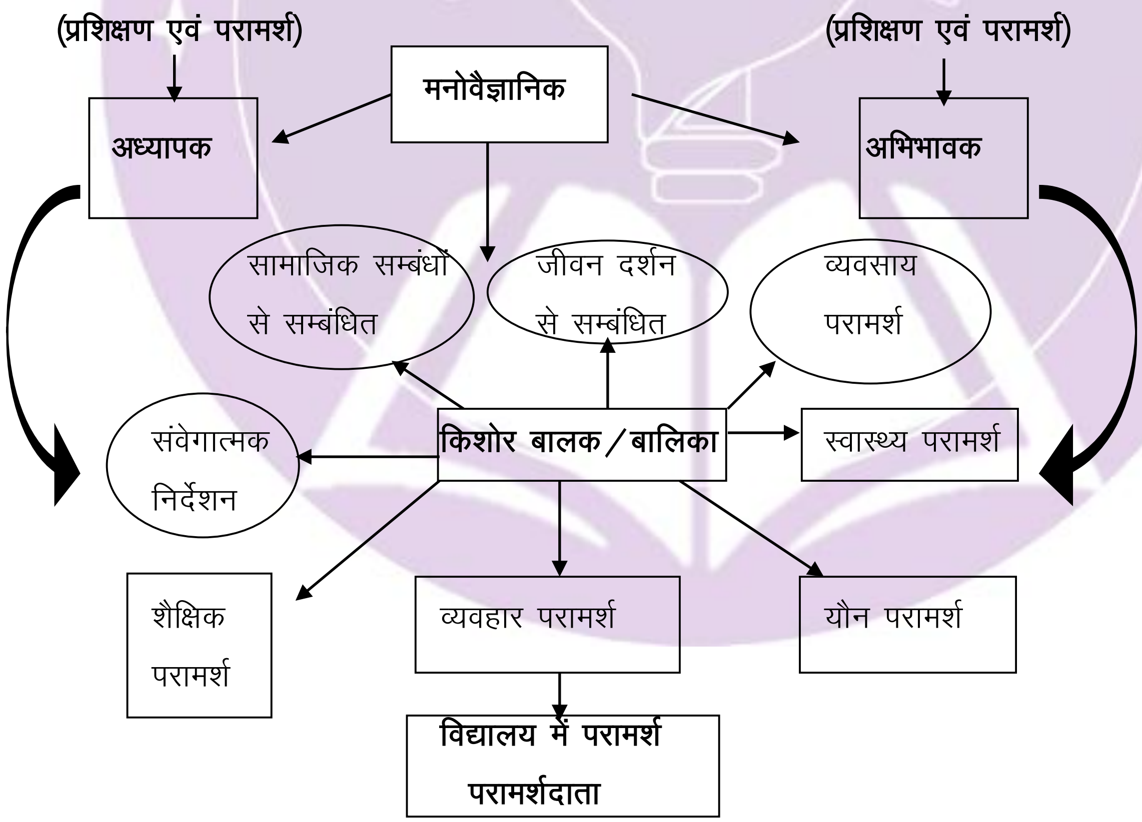

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

सुधा नरसिंहाचार के अनुसार– *''जो अभिभावक अपने किशोर बच्चों की आवश्यकता एवं अभिवृत्तियों को समझे बगैर दबाववश अपने मनचाहे जीवन को जीने के लिये विवश करते हैं एसे माता–पिता और किशोर बच्चों के मध्य दूरी बढ़ती है।''*

शिक्षको एवं अभिभावकों को समवेत रूप से प्रयास करना होगा और जैसा कि **ब्लयेर, जोन्स व सिम्पसन ने स्पष्ट किया कि** – *''किशोर की कुछ समस्यायें होती है यदि शिक्षक एवं अभिभावक, किशोरों को व्यस्कास्था में सरलतापूवर्क प्रवेश करने में सहायता देना चाहते हैं तो उनको समान रूप से किशोरों की अनोखी समस्याओं के स्वरूप से अवगत होना चाहिये। इस कार्य के लिये आधारभूत व्यवहार, सिद्धान्त, किशोरावस्था एवं प्रत्येक किशोर से सम्बंधित विशिष्ट ज्ञान का होना पहली शर्तें है।''*

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार शिक्षा पर बल देते हुये लिखा है – *''हमारे माध्यमिक विद्यालयों को छात्रों की विभिन्न प्रवृत्तियों रूचियों और योग्यताओं को पूर्ण करने के लिये विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों की व्यवस्था करनी चाहिये।''* **कोठारी कमीशन** ने भी हमारी माध्यमिक विद्यालयों में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा की सिफारिश की है।

ग्रामीण किशोरियों के लिये विद्यालयों में संचालित **मीना मंच** एक अच्छा उदाहरण है जिसमे किशोरियां अपनी भावनाओं, आवश्यकताओं समस्याओं की खुलकर मीना समूह में मीना सहायिका के समक्ष चर्चा करती हैं और इसमें स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं भी सम्मिलित होती है। इस प्रकार के मंच बालकों एवं बालिकाओं के लिये माध्यमिक स्तर पर संचालित करना चाहिये। जिससे किशोर बच्वें अपनी समस्याओं एवं आवश्यकतों को खुलकर चर्चा करें और अध्यापक एवं अभिभावक उनका सहयोग कर सही मार्ग दर्शन दे।

सन्दर्भ–

रिस्क थामस एम0 – प्रिन्सीपल एण्ड प्रैक्टिसेस ऑफ टीचिंग इन सेकेन्डरी स्कूल्स।

नरसिंहाचार (2008)– मीट ऑन एडोलेसेन्ट एजुकेशन एन आई ओपनर, वर्ल्ड एड्स दिवस पर कार्यशाला रिपोर्ट।

शंकर (2008) – स्कूल करिकुलम इज नॉट टच एच0आई0वी0 एड्स, एक लेख, इण्टरनेट।

एस0सी0ई0आर0टी0(2008)– टीचर स्टिल नॉट कम्फरटेबल विद आइडिया आफ एडोलेसेन्ट, एजुकेशन, वर्कशाप रिर्पोट, इक्सप्रेस इण्डिया।